॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः॥
हे नाथ!
मैं आपको भूलूँ नहीं
परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजके
प्रवचनोंसे संगृहीत

हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं

[परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजके प्रवचनोंसे संगृहीत]

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

संकलनकर्ता—

राजेन्द्र कुमार धवन

गीता प्रकाशन, गीता सत्संग मण्डल, पो० गीताप्रेस, गोरखपुर-273005 (उ०प्र०)

सम्पर्क सूत्र—09389593845, 07668312429

योगिनी एकादशी, वि० सं० २०६८

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं

सब भाई-बहन सावधान होकर भगवान्‌के चिन्तनमें लग जायँ। हरदम भगवान्‌से कहते रहें कि 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'। भगवान्‌की स्मृति सम्पूर्ण विपत्तियोंका नाश करनेवाली है—'हरिस्मृतिः सर्वविपद्विमोक्षणम्' (श्रीमद्भागवत ८। १०। ५५)। यह अन्धकारमें लालटेनकी तरह प्रकाश करनेवाली है, सहारा देनेवाली है। इसके सिवाय संसारमें कोई सहारा नहीं है। भगवान्‌के स्मरणमात्रसे मनुष्य संसार-बन्धनसे छूट जाता है—'यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात्। विमुच्यते........' (महाभारत, अनुशासन० १४९)। भगवान्‌को याद करनेसे सब काम ठीक हो जाते हैं। इसलिये सच्चे हृदयसे 'हे नाथ! हे नाथ!!' पुकारो। भगवान्‌से एक ही बात कहो कि 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं; ऐसी कृपा करो कि आपको भूलूँ नहीं'। एक श्लोक आता है—

शम्भुः श्वेतार्कपुष्पेण चन्द्रमा वस्त्रतन्तुना।
अच्युतः स्मृतिमात्रेण साधवः करसम्पुटैः॥

अर्थात् 'शंकर सफेद आकके फूलसे, चन्द्रमा वस्त्रके तन्तुसे और साधुजन हाथ जोड़नेसे प्रसन्न हो जाते हैं, पर भगवान् विष्णु स्मरण करनेमात्रसे प्रसन्न हो जाते हैं।' स्मरणके सिवाय किसी वस्तुकी, किसी उद्योगकी जरूरत नहीं। कुन्ती माताने भगवान्‌से कहा कि देखो, तुम्हारे भाई वनमें दुःख पा रहे हैं, तुम्हें दया नहीं आती? तो भगवान्‌ने यही उत्तर दिया कि बूआजी, मैं क्या करूँ, द्रौपदीका चीर खींचा गया तो उसने मेरेको याद किया, पर युधिष्ठिरने सब कुछ दाँवमें लगा दिया, पर मेरेको याद किया ही नहीं! कम-से-कम मेरेको याद तो कर लेते। तात्पर्य है कि भगवान्‌को याद करनेमात्रसे कल्याण हो जाता है, सदाके लिये दुःख मिट जाता है, महान् आनन्दकी प्राप्ति हो जाती है। इतना सस्ता सौदा और क्या होगा! साधन तो इतना सुगम, पर फल इतना महान्! इतना सुगम काम भी हम न कर सकें तो क्या करेंगे? इसमें न तो पैसा खर्च होता है, न कोई परिश्रम होता है। इसलिये आपसे यह कहना है कि सुबह नींद खुलनेसे लेकर रात्रि नींद आनेतक हरदम 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं' यह कहना शुरू कर दो। आपके मनमें भगवान्‌का जैसा स्वरूप जँचा है, उसको याद करो और यह लगन लगा दो कि 'हे मेरे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'। इसीमें अपने-आपको खो दो। फिर सब काम ठीक हो जायगा, इसमें सन्देह नहीं।

भगवान्‌ने गीतामें अर्जुनसे कहा है—'तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च' (गीता ८। ७) 'तू सब समयमें मेरा स्मरण कर और युद्ध भी कर'। इसका तात्पर्य यह हुआ कि समयपर तो काम-धंधा करो और हरदम भगवान्‌को याद करो। आप

शुद्ध हों, अशुद्ध हों, अच्छे हों, मन्दे हों, स्वस्थ हों, बीमार हों, धनी हों, निर्धन हों, कैसे ही क्यों न हों, केवल भगवान्‌को याद करो। हृदयसे, प्रेमसे, आर्त होकर, रोकर भगवान्‌से कहो कि 'हे मेरे नाथ! ऐसी कृपा करो, मैं आपको भूलूँ नहीं'। केवल भगवान्‌की यादमात्रसे कल्याण हो जाय! लगन आपकी और कृपा भगवान्‌की! कितनी सुगम, सरल बात है! तरह-तरहके साधन हैं, पर सीधा-सरल साधन है—'हे मेरे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'। केवल याद करनेसे सदाके लिये दुःख मिट जाय, यह कितना सुगम साधन है!

सच्चे हृदय से प्रार्थना जब भक्त सच्चा गाय है।
तो भक्तवत्सल कान में वह पहुँच झट ही जाय है॥

भगवान्‌के सब जगह ही कान हैं—'सर्वतः श्रुतिमल्लोके' (गीता १३। १३)। आप बोलते हो भगवान्‌के कानमें ही बोलते हो। भगवान्‌से कहो कि 'हे नाथ! एक ही प्रार्थना है कि मैं आपको भूलूँ नहीं। इसके सिवाय मेरेको न धन-सम्पत्ति चाहिये, न मान-बड़ाई चाहिये, न संसारमें यश-कीर्ति चाहिये, न प्रसिद्धि चाहिये। बस, एक ही बात चाहिये कि आपको भूलूँ नहीं।' एक ही बातमें आपका सब काम पूरा हो जायगा, कोई काम बाकी नहीं रहेगा। अभीसे कहना शुरू कर दो कि 'हे मेरे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'। अगर हृदयमें भाव कम हो तो भी कहना शुरू कर दो। कहते-कहते नकल भी असल हो जाती है। काम-धंधा करते हुए, रसोई बनाते हुए, झाड़ू देते हुए, जल भरते हुए, हर समय कहते रहो कि 'हे नाथ! ऐसी कृपा करो कि मैं आपको भूलूँ नहीं', 'हे मेरे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'। पाँच मिनटसे ज्यादा देरी न हो। अगर यह भी न कर सको तो दस मिनटमें कह दो। दस मिनटसे ज्यादा हो जाय तो एक समय उपवास करो। नींद आ जाय तो जब नींद खुले, तब कह दो कि 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'। मन लगे चाहे न लगे, कहना मत छोड़ो। करके देखो कि लाभ होता है कि नहीं होता! भगवान्‌के सामने की हुई प्रार्थना निरर्थक नहीं जाती।

भगवान्‌की याद आ जाय तो खुशी मनाओ कि यह भगवान्‌की कृपा हो गयी! कल्याण भगवान्‌की कृपासे ही होता है। कोई भक्त ऐसा नहीं कह सकता कि मैं सर्वथा निष्पाप हूँ। निष्पाप होता तो संसारमें जन्म क्यों होता? भगवान् माफ करते हैं, तभी कल्याण होता है। सर्वथा निष्पाप, पवित्र होकर अपना कल्याण कर ले, ऐसी ताकत किसीमें नहीं है।

भगवान् सब जगह हैं, पर बिना याद किये वे काम नहीं आते। एक आदमीकी गाय बीमार हो गयी। वैद्यने कहा कि तुम गायको काली मिर्च खिलाकर ऊपरसे एक पाव घी पिला दो। उस आदमीने गायको काली मिर्च तो दे दी, पर घी नहीं

दिया। उसने सोचा कि रोज गायके दूधसे एक पाव घी निकलता है; अतः एक दिन गायको दुहूँगा नहीं, जिससे घी उसके भीतर ही रह जायगा। परन्तु इससे गाय और बीमार हो गयी! तात्पर्य है कि गायके शरीरमें घी मौजूद रहता हुआ भी गायके काम नहीं आता। विधिपूर्वक निकाला हुआ घी ही काम आता है। इसी तरह भगवान् सब जगह रहते हुए भी काम नहीं आते। पर उनको याद करो तो बेड़ा पार है! यह निकाला हुआ घी है। इसलिये सब जगह भगवान्‌को देखो और उनको याद करो कि 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'। आप पापी या पुण्यात्मा कैसे ही क्यों न हों, केवल भगवान्‌को यादमात्र करनेसे शान्ति मिल जायगी। घी निकालनेमें तो मेहनत होती है, पर इसमें मेहनत है ही नहीं। केवल याद करना है कि 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'। हमें और कुछ नहीं चाहिये, केवल एक ही माँग है कि 'हे मेरे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'।

‘हे नाथ!’ पुकारकी महिमा

[यद्यपि भीतरमें राग-द्वेष, काम-क्रोध, मोह आदि वृत्तियाँ रहनेके कारण सच्ची प्रार्थना होती नहीं, फिर भी बार-बार प्रार्थना करते रहो। जैसे मोटरको स्टार्ट करते समय बार-बार चाबी घुमाते-घुमाते कभी एक ही चाबीसे मोटर स्टार्ट हो जाती है, ऐसे ही प्रार्थना करते-करते कभी हृदयसे सच्ची प्रार्थना निकलेगी तो एक ही पुकारसे काम हो जायगा।]

१. भगवत्प्राप्तिका सबसे सरल उपाय है—व्याकुलतापूर्वक हृदयसे ‘हे नाथ! हे मेरे नाथ!!’ पुकारो। यह नामजप आदि सब साधनोंसे तेज है। इसे पापी-पुण्यात्मा, मूर्ख-विद्वान् आदि सभी कर सकते हैं।

२. ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग आदि कोई उपाय समझमें न आये तो कोई जरूरत नहीं, आप ‘हे नाथ! हे मेरे नाथ!!’ पुकारो।

३. मन्त्रोंमें, अनुष्ठानोंमें उतनी शक्ति नहीं है, जितनी शक्ति प्रार्थनामें है। अतः ‘हे नाथ! हे नाथ!!’ पुकारो।

४. ‘हे नाथ! हे नाथ!!’ पुकारो। सब बीमारी, आफत, शंका मिट जायगी। यह सब रोगोंकी रामबाण दवा है।

५. कल्याणप्राप्तिका सीधा सुगम उपाय है—भीतरसे व्याकुलतापूर्वक ‘हे नाथ! हे नाथ!!’ पुकारो। आपका कल्याण होगा.....होगा.....होगा! नहीं हो तो मेरेको दण्ड देना!

६. ‘हे मेरे नाथ!’—ऐसे हृदयकी पुकार भगवान्‌को द्रवित कर देती है। पुकार जल्दी भगवान्‌तक पहुँचती है।

७. कलियुगसे बचना चाहो तो हरदम भगवान्‌को पुकारते रहो—‘हे नाथ! हे मेरे नाथ!!’

८. न गुरु बनानेकी जरूरत है, न शास्त्र पढ़नेकी जरूरत है, न कहीं जानेकी जरूरत है, केवल 'हे नाथ! हे नाथ!!' पुकारो तो आपकी योग्यताके अनुसार आपको गुरु मिल जायगा, सन्त-महात्मा मिल जायँगे, उपदेश मिल जायगा।

९. चलते-फिरते, उठते-बैठते, रातमें, दिनमें, काम करते हुए, हर समय व्याकुलतापूर्वक सच्चे हृदयसे 'हे नाथ! हे नाथ!!' पुकारो। अनन्त जन्मोंके सब पाप भस्म हो जायँगे।

१०. अपनी निर्बलताका अनुभव और भगवान्‌की कृपाशक्तिपर विश्वास—ये दो बातें हों तो 'हे नाथ! हे नाथ!!' पुकारनेसे काम-क्रोधादि दोष अवश्य मिट जायँगे।

११. अगर संसारकी आसक्ति न छूटे तो 'हे नाथ! हे नाथ!!' पुकारो।

१२. जैसे उफनते हुए दूधमें ठण्डा पानी डालें तो वह शान्त हो जाता है, ऐसे ही जब कभी अहंकार आये तो 'हे नाथ! हे नाथ!!' पुकारो, अहंकार शान्त हो जायगा।

१३. अगर भगवान्‌में प्रेम चाहते हो तो भगवान्‌के चरणोंके शरण होकर 'हे नाथ! हे नाथ!!' पुकारो।

१४. 'हे नाथ! हे मेरे नाथ!!' कहते रहो तो कभी पट काम हो जायगा! जो काम वर्षोंमें नहीं हुआ, वह एकाएक हो जायगा, पर आप लगे रहो।

१५. 'हे नाथ! हे नाथ!!' कहकर भगवान्‌के चरणोंमें पड़ जाओ और निश्चिन्त हो जाओ। फिर भगवान्‌की कृपासे सब ठीक हो जायगा।

१६. काम तो बस इतना ही है कि हाथ जोड़ दे अर्थात् 'हे नाथ!!' कहकर भगवान्‌के शरण हो जाय। इतनेमें बेड़ा पार है!

१७. भगवान्‌के बड़ी भारी पोल है, पता नहीं है आपको! अब याद कर लो। सच्चे हृदयसे पुकारो 'हे नाथ! हे नाथ!!' 'ना.....थ'—'थ' कहते ही वे आ जायँगे!!

प्रार्थना

[भक्त जहाँ-कहीं जोरसे बोलकर प्रार्थना करे, धीरेसे बोलकर प्रार्थना करे अथवा मनसे प्रार्थना करे, वहाँ ही भगवान् अपने कानोंसे सुन लेते हैं (१३। १३)।]

'हे नाथ! आप मेरेको पृथ्वीपर रखें या स्वर्गमें रखें अथवा नरकोंमें रखें; बालक रखें या जवान रखें अथवा बूढ़ा रखें; अपमानित रखें या सम्मानित रखें; सुखी रखें या दुःखी रखें; जैसी परिस्थितिमें रखना चाहें, वैसे रखें, पर मैं आपको भूलूँ नहीं।' (१५। ७)

'हे प्रभो! मैंने न जाने किन-किन जन्मोंमें आपके प्रतिकूल क्या-क्या आचरण किये हैं, इसका मेरेको पता नहीं है। परन्तु उन कर्मोंके अनुरूप आप जो परिस्थिति भेजेंगे, वह मेरे लिये सर्वथा कल्याणकारक ही होगी। इसलिये मेरेको किसी भी परिस्थितिमें किंचिन्मात्र भी असन्तोष न होकर प्रसन्नता-ही-प्रसन्नता होगी।'

'हे नाथ! मेरे कर्मोंका आप कितना खयाल रखते हैं कि मैंने न जाने किस-किस जन्ममें, किस-किस परिस्थितिमें परवश होकर क्या-क्या कर्म किये हैं, उन सम्पूर्ण कर्मोंसे सर्वथा रहित करनेके लिये आप कितना विचित्र विधान करते हैं! मैं तो आपके विधानको किंचिन्मात्र भी समझ नहीं सकता और मेरेमें आपके विधानको समझनेकी शक्ति भी नहीं है। इसलिये हे नाथ! मैं उसमें अपनी बुद्धि क्यों लगाऊँ? मेरेको तो केवल आपकी तरफ ही देखना है। कारण कि आप जो कुछ विधान करते हैं, उसमें आपका ही हाथ रहता है अर्थात् वह आपका ही किया हुआ होता है, जो कि मेरे लिये परम मंगलमय है।' (९। ३४)

'हे नाथ! आप समता, बोध ही नहीं, दुनियाके उद्धारका अधिकार भी दे दें, तो भी मेरेको कुछ भी मालूम नहीं होना चाहिये कि मेरेमें यह विशेषता है। मैं केवल आपके भजन-चिन्तनमें ही लगा रहूँ।' (१०। ११)

—'साधक-संजीवनी' से संकलित

समस्त साधनोंका सार

भगवत्स्मरण समस्त साधनोंका सार है। भगवान्‌को याद करते ही सम्पूर्ण अमंगल नष्ट हो जाते हैं। इसमें लाभ-ही-लाभ है, हानि है ही नहीं। सत्संगकी बातोंमें भगवान्‌को याद करना सबसे मार्मिक बात है, सबकी सार बात है। अतः चलते-फिरते, उठते-बैठते हर समय भीतरसे भगवान्‌को याद रखो, फिर शरीर चाहे जब छूटे।

*** *** ***

'हे मेरे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'—यह प्रार्थना हरेक भाई-बहनके लिये बड़े कामकी है। आप हरदम यह प्रार्थना करके देखो तो सही, विचित्रता आ जायगी! बीचमें अपनी बुद्धि मत लगाओ। भगवान्‌को भूलें नहीं, फिर सब काम ठीक हो जायगा। स्वयं पहलेसे ही परमात्माका अंश है और वह उसीके शरण हो जाय तो फिर बाकी क्या रहेगा?

*** *** ***

कोई काम करो, कहीं जाओ, भगवान्‌को अवश्य याद कर लो। भगवान्‌को याद करनेमात्रसे मनुष्य संसार-बन्धनसे छूट जाता है—'**यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात्। विमुच्यते........॥**' (महाभारत, अनुशासन० १४९)। भगवान्‌को याद करनेसे उनकी कृपासे सब काम सिद्ध होते हैं। लक्ष्मणजी रामजीको नमस्कार किये बिना मेघनादको मारने गये तो मूर्च्छित हो गये (मानस, लंका० ५२), और रामजीको नमस्कार करके गये तो मेघनादको मार दिया—'*रघुपति चरन नाइ सिरु चलेउ तुरंत अनंत*' (मानस, लंका० ७५)। भगवान्‌को याद रखनेसे विजय और भूल जानेसे पराजय होती है। इसलिये हरेक काम भगवान्‌को याद करके करो। संसारके काममें विजय दीखती है, विजय होती नहीं, पर भगवान्‌के भजनमें सदा विजय ही होती है, पराजय होती ही नहीं। जैसे वृक्षके मूलमें पानी देनेसे पूरे वृक्षको पुष्टि मिलती है और अन्न-जल देनेसे पूरे शरीरको शक्ति मिलती है, ऐसे ही भगवान्‌को याद करनेसे दुनियामात्रको ताकत मिलती है। यह गुप्त बात है, हर कोई बताता नहीं! भगवान्‌को याद करना सब बातोंका सार है। भगवान्‌को याद करनेसे दुःख नहीं रहता और भगवान्‌के विमुख होनेसे सुख नहीं रहता।

*** *** ***

भगवान्‌को याद करना सम्पूर्ण दोषोंके नाशका उपाय है। राग-द्वेष हो जायँ तो आर्त होकर 'हे नाथ! 'हे मेरे नाथ!' पुकारो। जैसे डाकू लूटते हों तो आदमी पुकारता है, ऐसे आर्त होकर भगवान्‌को पुकारो। ऐसा करनेसे जरूर फर्क पड़ेगा। भगवान्‌से कहनेपर हरेक दोष दूर होता है। थोड़ा भी राग उत्पन्न हो तो 'हे नाथ! 'हे मेरे नाथ!' पुकारो।

अवगुणोंका नाश करनेके लिये और सद्गुणोंको लानेके लिये—दोनोंके लिये भगवान्‌को पुकारो। उनकी कृपासे ही अवगुणोंका नाश और सद्गुणोंकी रक्षा होती है। चलते-फिरते, उठते-बैठते हरदम 'हे नाथ! 'हे मेरे नाथ!' पुकारते रहो तो भगवान् सब तरहसे रक्षा करेंगे। जब अपने उद्योगसे राग-द्वेष दूर न हों, तब दुःखी होकर भगवान्‌को पुकारो। भगवान्‌की कृपासे बड़ी सरलतासे सब काम हो जायगा।

पहले अपना बल लगाकर इन दोषोंको दूर करो। जब दूर नहीं हों, तब निर्बल होकर भगवान्‌को 'हे नाथ! 'हे मेरे नाथ!' पुकारो। इसके समान दूसरा कोई उपाय नहीं है। पर अपनेमें बलका अभिमान नहीं होना चाहिये। अपने बलका अभिमान होगा तो सच्ची प्रार्थना कर सकोगे नहीं, देरी लगेगी। अपनेमें बल, बुद्धि, विद्या, साधन, वर्ण, आश्रम आदिका अभिमान होगा तो यह उपाय काम नहीं देगा।

भगवान्‌को पुकारनेमें हार स्वीकार मत करो, भले ही वर्ष लग जायँ। अन्तमें आपकी विजय जरूर होगी, इसमें सन्देह नहीं है। अपना समझकर भगवान्‌को पुकारो। नकली प्रार्थनाको भी भगवान् असली मानकर स्वीकार कर लेते हैं। अपने बलसे निराश और भगवान्‌के बलपर विश्वास—ये दो बातें होंगी तो जरूर सफलता मिलेगी।

*** *** ***

भगवान्‌को याद करनेमात्रसे वे प्रसन्न हो जाते हैं—'अच्युतः स्मृतिमात्रेण'। भगवान्‌से एक ही चीज माँगो कि 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'। यह एक मन्त्र है, जिससे भगवान्‌की स्मृति होगी। स्मृति होनेसे आपमें शान्ति, आनन्द, दया, क्षमा, उदारता आदिका ठिकाना नहीं रहेगा। सम्पूर्ण दुःखोंका अत्यन्त अभाव हो जायगा। केवल उनको हर समय याद रखो। भगवान्‌को याद रखनेमात्रसे सब ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ पासमें आ जाती हैं।

*** *** ***

भगवान्‌को हर समय याद करो। भगवान्‌को याद रखनेके समान कोई कीमती बात नहीं है। रात-दिन, सुबह-शाम हर समय भगवान्‌से प्रार्थना करो कि 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'। भगवान्‌की स्मृति सम्पूर्ण विपत्तियोंका नाश करनेवाली है—'हरिस्मृतिः सर्वविपद्विमोक्षणम्' (श्रीमद्भागवत ८। १०। ५५)। केवल याद करनेसे भगवान् प्रसन्न हो जाते हैं।

*** *** ***

सब शास्त्रोंकी सार बात है—भगवान्‌को याद करना। भगवान्‌के चिन्तनके समान पवित्र कोई चीज नहीं है। जिस समय आप भगवान्‌को याद करते हैं, उस समय आपका

सम्बन्ध भगवान्‌के साथ होता है, आपकी स्थिति भगवान्‌में होती है।

*** *** ***

हरदम 'हे नाथ! हे नाथ!' कहकर भगवान्‌को पुकारो। संसारकी चाहनाको छोड़ना हो तो भगवान्‌को पुकारो। दुर्गुणोंको छोड़ना हो तो भगवान्‌को पुकारो। सद्‌गुणोंको लाना हो तो भगवान्‌को पुकारो। संसारका चिन्तन आ जाय तो भगवान्‌को पुकारो कि 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'। जो होगा, भगवान्‌की कृपासे होगा, अपने बलसे नहीं। बच्चेपर आफत आ जाय तो माँको पुकानेके सिवाय वह और क्या करे? थोड़ा भी संसारका चिन्तन है, आकर्षण है तो रात-दिन भगवान्‌को पुकारो। संसारके चिन्तनसे रहित होते ही भगवान् अपने-आप मिल जायँगे।

*** *** ***

भगवान्‌के साथ हमारा सम्बन्ध स्वतन्त्र है, किसीके अधीन नहीं है। बीचमें दूसरेकी आशा रखते हो, दूसरेसे सम्बन्ध जोड़ते हो, यह बाधा होती है। केवल भगवान् हैं और आप हैं, बीचमें किसी दलालकी जरूरत नहीं है। आप सच्चे हृदयसे भगवान्‌के शरण हो जाओ और 'हे नाथ! हे नाथ!' पुकारो। स्वप्नमें भी किसीकी जरूरत नहीं है। भगवान्‌का जो नाम प्यारा लगता हो, उसका जप करो और प्रार्थना करो कि 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'। आपका कल्याण जरूर होगा, इसमें सन्देह नहीं।

*** *** ***

आज संसारमें मुक्ति होना बड़ा कठिन हो रहा है! ऐसे समय सच्चे हृदयसे भगवान्‌का आश्रय लेकर, 'मैं भगवान्‌का हूँ, भगवान् हमारे हैं'—ऐसा मानकर 'हे नाथ! हे नाथ!!' करते हुए भगवान्‌को पुकारें तो सुगमतासे सिद्धि हो जाती है।

*** *** ***

प्रत्येक कार्य करनेसे पहले भगवान्‌को याद करना चाहिये। कोई भी पत्र लिखें तो पहले सबसे ऊपर भगवान्‌का नाम लिखें। कोई भी काम करें, पहले भगवान्‌को याद करें—यह हमारी संस्कृतिकी खास बात है। मैंने पढ़ना आरम्भ किया तो सबसे पहले 'श्रीरामजी' लिखना सीखा, इसके बादमें वर्णमाला सीखी। अगर आप आध्यात्मिक उन्नति चाहते हैं तो हरेक कामसे पहले भगवान्‌को याद करें।

*** *** ***

सुबह नींद खुलनेसे लेकर रात्रि नींद आनेतक चार-चार, पाँच-पाँच मिनटके बाद कहते रहो कि 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'। भगवान् सुलभतासे प्राप्त हो जायँगे! आप करके देखो। वृत्ति अच्छी हो या बुरी, भगवान्‌को भूलो मत।

*** *** ***

आपको अबतक भगवान्‌का जैसा स्वरूप समझमें आया है, उसको हर समय याद करो। भगवान् उसीको अपना स्वरूप मान लेते हैं, यह उनका कायदा है। 'हे नाथ! हे मेरे नाथ!! हे मेरे प्रभो!!' ऐसे पुकारो। भगवान् सबके लिये सुलभ हैं। योग्य हों, अयोग्य हों, सदाचारी हों, दुराचारी हों, भले हों, बुरे हों, हरेक भाई-बहन भगवान्‌को अपना कह सकते हैं। कोई भगवान्‌को पुकारता है तो उसके अवगुणोंकी तरफ भगवान्‌की दृष्टि जाती ही नहीं। वे तो केवल उसकी पुकारको देखते हैं।

*** *** ***

हरदम मन-ही-मन यही प्रार्थना करते रहो कि 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'। एक प्रभुको याद रखनेसे सब ठीक हो जायगा—*'एकै साधे सब सधै, सब सधै सब जाय'*। 'हे नाथ! हे नाथ!!' इसमें मन लगा दो, अन्य साधनोंका भरोसा मत रखो।

*** *** ***

'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'—इस प्रार्थनामें बड़ा भारी बल है। निरन्तर नामजप करो और थोड़ी-थोड़ी देरमें यह प्रार्थना करते रहो। निहाल हो जाओगे! भगवान्‌को भूलूँ नहीं—यह काम हमारा है और सब काम भगवान्‌का है। आपको कुछ काम करना नहीं पड़ेगा।

*** *** ***

भगवान्‌को याद करनेसे अन्तःकरण स्वाभाविक निर्मल होता है और अच्छी बातें पैदा होती हैं। थोड़ी-थोड़ी देरमें कहते रहो कि 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं', 'हे मेरे प्रभो! मैं आपको भूलूँ नहीं', फिर अपने-आप सद्‌गुण आयेंगे। भगवान्‌को याद करनेसे, उनकी चर्चा करनेसे सद्‌गुण-सदाचार स्वाभाविक आते हैं।

*** *** ***

'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'—यह कहते रहो, फिर सब काम अपने-आप ठीक हो जायगा।

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

तुमको भूलूँ अब नहिं नाथ, दास पर ऐसी कृपा करो।
चढ़े रहो चित ऊपर मेरे, कबहू नायँ टरो॥ टेर
बिकल रहूँ दरशन बिनु तेरे, ऐसी आग लगा दो मेरे।
जिन्दा रह नहिं सकूँ एक पल, ऐसी लगन भरो॥
चाहूँ स्वर्ग नरक में डारो, सुख चाहूँ तो दुःख मत टारो।
प्यारे लगते रहो मुझे तुम, दूजी चाह हरो॥
माँ माँ कह बालक अकुलावे, ले गोदी झट हृदय लगावे।
आप अनन्त जनम की माता, धीरज काहे धरो॥

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः॥

हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं

परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजके
प्रवचनोंसे संगृहीत